कतिपय उपनिषदों का सामान्य परिचय-

ईशावास्योपनिषद्- यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेदसंहिता का चालीसवाँ अध्याय है। इसमें केवल 18 पद्य हैं जिनमें ज्ञान दृष्टि से कर्म की उपासना का रहस्य समझाया गया है। मन्त्रभाग का अंश होने से इसका

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

विशेष महत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है। यह उपनिषद् कर्म संन्यास का पक्षपाती न होकर यावज्जीवन निष्काम भाव से कर्म सम्पादन का अनुरागी है।

केनोपनिषद्→ यह उपनिषद् सामवेद के तलवकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध होने के कारण इसे जैमिनीय उपनिषद् कहते हैं। यह उपनिषद् 'केन' शब्द से आरम्भ होने के कारण ही सम्भवतः केनोपनिद् - इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस उपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय परब्रह्मतत्त्व बहुत ही गहन है, अतएव उसको भलीभाँति समझाने के लिए गुरु-शिष्य-संवाद के रूप में तत्त्व का विवेचन किया गया है। इस उपनिषद् के प्रतिपाद्य विषय का निष्कर्ष है कि जो भी ब्रह्मतत्त्व को जान लेता है, वह सांसारिक समस्त पापों से विमुक्त होकर मोक्षत्व को प्राप्त हो जाता है।

कठोपनिषद्→ यह उपनिषत् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत है। इसमें यम और नचिकेता के संवादरूप से आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या की गई है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं। इसके विषय का आरम्भ उद्दालक ऋषि के विश्वजित यज्ञ की कथा से होता है। ब्राह्मण अतिथि नचिकेता द्वारा यमराज से प्रार्थित तीन वरों का इस उपनिषद् ग्रन्थ में बड़ी मार्मिकता से वर्णन किया गया है। नचिकेता ने तीसरा वर ब्रह्मविद्या का माँगा था। यमराज के द्वारा नचिकेता को प्रदत्त ब्रह्मविद्या का उपदेश ही इसका प्रतिपाद्य विषय है।

प्रश्नोपनिषद्→ प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद के पिप्पलाद-शाखीय ब्राह्मण के अन्तर्गत है। इस उपनिषद् में

पिप्पलाद ऋषि ने सुकेशा आदि छः ऋषियों के छः प्रश्नों का क्रम से उत्तर दिया है; इसलिए इसका नाम प्रश्नोपनिषद ~~होगया~~ हो गया। मीमांस्य प्रश्न हैं-
(१) किस प्रसिद्ध और सुनिश्चित कारणविशेष से यह सम्पूर्ण

Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

प्रजा नाना रूपों में उत्पन्न होती है? (iv) कुल कितने देवता प्रजा को धारण करते हैं, उनमें से कौन-कौन से इसे प्रकाशित करते हैं, इन सबों में कौन सर्वश्रेष्ठ है? (v) प्राण किससे उत्पन्न होता है, इस शरीर में कैसे आता है, अपने को विभाजित करके किस प्रकार स्थित होता है, किस ढंग से उत्क्रमण करता हुआ शरीर से बाहर निकलता है, किस प्रकार बाह्य जगत को भलीभाँति धारण करता है, मन और इन्द्रिय आदि आध्यात्मिक जगत को किस प्रकार धारण करता है? (vi) मनुष्य शरीर में कौन-कौन सोते हैं, इसमें कौन-कौन जागते हैं, कौन देवता स्वप्नों को देखता है, सुख किसको होता है, सबके सब देवता सर्वभाव से किसमें स्थित हैं? (vii) मनुष्यों में से वह जो कोई भी मृत्युपर्यन्त ओंकार का भलीभाँति ध्यान करता है, वह उस उपासना बल से किस लोक को जीत लेता है? (viii) सोलह कलाओं से युक्त पुरुष कहाँ है?

इन प्रश्नों के उत्तर में अध्यात्म के विविध आयामों का विवेचन बड़ी गम्भीरता एवं सुन्दरता के साथ किया गया है। अक्षरब्रह्म ही इस जगत की प्रतिष्ठा बतलाया गया है।

मुण्डकोपनिषद्→ यह उपनिषद् अथर्ववेद की शौनक शाखा में है। यह मुण्डक (मुण्डन सम्पन्न व्यक्तियों) के निमित्त निर्मित है। इसमें सम्पूर्ण जगत के रचयिता और सब लोकों की रक्षा करने वाले ब्रह्मा ने सबसे पहले ज्येष्ठतम पुत्र अथर्वा को समस्त विद्याओं की आधारभूता ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया। वेदान्त शब्द का सर्वप्रथम ~~प्रयोग~~ प्रयोग यहीं प्राप्त होता है —

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे॥
(3/2/6)

यह ग्रन्थ तीन मुण्डकों में और प्रत्येक मुण्डक दो खण्डों में विभाजित है। द्वैतवाद का प्रधान स्तम्भरूप 'द्वा सुपर्णा

Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

सयुजा सखाया' (3/1) मन्त्र इसी उपनिषद् में है। इस उपनिषद् में ब्रह्मज्ञान के विषय में कहा गया है-

"भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥"
(2/2/8)

अर्थात् कार्य-कारण स्वरूप उन परात्पर परब्रह्म पुरुषोत्तम तत्त्व से जान लेने पर जीवात्मा के हृदय की गाँठ खुल जाती है, सम्पूर्ण संशय कट जाते हैं और समस्त शुभाशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।

माण्डूक्योपनिषद् - यह उपनिषद् आकार में जितना स्वल्पकाय है, सैद्धान्तिक दृष्टि से ~~अत्र अत्र~~ उतना ही महत्त्वपूर्ण है। इसमें केवल 12 खण्ड या वाक्य हैं। इसमें ओंकार के त्रिकालव्यापी महत्त्व के प्रतिपादन के अनन्तर उसकी उपलब्धि का विषय वर्णित है। ब्रह्म और आत्मा विषयक चिन्तन भी इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् - यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अंग है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। इन अध्यायों को क्रमशः शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली और भृगुवल्ली कहा जाता है। प्रथम वल्ली में ओंकार माहात्म्य के साथ-साथ धार्मिक विधानों का ~~व~~ वर्णन, द्वितीय वल्ली में ब्रह्मतत्त्व का विवेचन और तृतीय वल्ली में वरुण द्वारा अपने पुत्र को उपदेश देना वर्णित है।

जगत् के विकास क्रम का स्पष्ट उल्लेख भी इस उपनिषद् में प्राप्त होता है ~

"तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।"

~~तस्येदमेव शिरः~~

Scanned with CamScanner

अर्थात् परमात्मा से पहले-पहल आकाशतत्त्व उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी तत्त्व उत्पन्न हुआ। पृथिवी से समस्त औषधियाँ उत्पन्न हुईं, औषधियों से अन्न उत्पन्न हुआ, अन्न से ही मनुष्य शरीर उत्पन्न हुआ। यह मनुष्य-शरीर निश्चय ही अन्नरसमय है।

शिक्षा वल्ली में वर्ण, स्वर, मात्रा बल इत्यादि के विषय में बताया गया है और वेदों के अध्ययन, ओम के चिन्तन और पवित्र जीवन का चित्रण करके उपनिषद् की शिक्षाओं को सीखने की योग्यता निर्धारित की गई है।

ऐतरेयोपनिषद् → ऋग्वेद के ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय आरण्यक के अन्तर्गत चतुर्थ से लेकर षष्ठ अध्यायों की संज्ञा ऐतरेयोपनिषद् है। इसके तीन अध्यायों में क्रमशः सृष्टि, जीव और ब्रह्म-इन तीन तत्त्वों का विवेचन है। सृष्टि प्रक्रिया का विवेचन बड़ा वैज्ञानिक है-

"तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्य मुखं निरभिद्यत यथाण्डं मुखाद्वाग्वाचोऽग्निर्नासिके निरभिद्येतां नासिकाभ्यां प्राणः प्राणाद्वायुरक्षिणी निरभिद्येतामक्षिभ्यां चक्षुश्चक्षुष आदित्यः कर्णौ निरभिद्येतां कर्णाभ्यां श्रोत्रं श्रोत्राद्दिशस्त्वङ् निरभिद्यत त्वचो लोमानि लोमभ्य ओषधिवनस्पतयो हृदयं निरभिद्यत हृदयान्मनो मनसश्चन्द्रमा नाभिर्निरभिद्यत नाभ्या अपानोऽपानान्मृत्युः शिश्नं निरभिद्यत शिश्नाद्रेतो रेतस आपः।" (1।1।4)

अर्थात्

परमात्मा ने उस हिरण्यगर्भ पुरुष को लक्ष्य करके संकल्परूप तप किया, उस तप से तपे हुए हिरण्यगर्भ के शरीर से पहले अण्डे की तरह फूटकर मुखछिद्र प्रकट हुआ। मुख से वाक् इन्द्रिय और उससे अग्निदेवता प्रकट हुआ। फिर नासिका के दोनों छिद्र उत्पन्न हुए, नासिकाछिद्रों में से

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

प्राण उत्पन्न हुआ और प्राण से वायुदेवता उत्पन्न हुआ। फिर दोनों आँखों के छिद्र प्रकट हुए, आँखों के छिद्रों से नेत्र इन्द्रिय प्रकट हुई और उससे सूर्य प्रकट हुआ। फिर कानों के छिद्र प्रकट हुए जिससे श्रोत्रेन्द्रिय प्रकट हुई और इनसे दिशाएं प्रकट हुईं। फिर त्वचा प्रकट हुई, त्वचा से रोम उत्पन्न हुए और रोमों से ओषधि और वनस्पतियाँ प्रकट हुईं, फिर हृदय प्रकट हुआ, हृदय से मन का आविर्भाव हुआ और मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ। फिर नाभि उत्पन्न हुई, नाभि से अपानवायु प्रकट हुआ और अपानवायु से मृत्युदेवता उत्पन्न हुआ। इसके बाद लिङ्ग प्रकट हुआ और उससे वीर्य और वीर्य से जल उत्पन्न हुआ।

श्वेताश्वतरोपनिषद्- कृष्णयजुर्वेद के श्वेताश्वतर ब्राह्मण का एक भाग श्वेताश्वतरोपनिषद् है। इसमें छः अध्याय हैं। इस उपनिषद् का उद्देश्य शैव धर्म को गौरव प्रदान करना प्रतीत होता है। भक्तितत्त्व का सर्वप्रथम प्रतिपादन इसकी प्रमुख विशेषता है। सांख्य तथा वेदान्त के उदयकाल के सिद्धान्तों की जानकारी देने के लिए यह उपनिषद् महत्त्वपूर्ण है।

बृहदारण्यकोपनिषद्- यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद की काण्वी शाखा के वाजसनेयि ब्राह्मण के अन्तर्गत है। आकार में यह सबसे बृहत् है एवं वन में अध्ययन की जाने से इसे आरण्यक कहा जाता है। इस प्रकार बृहत् और आरण्यक होने के कारण इसका नाम बृहदारण्यक हो गया। दार्शनिक याज्ञवल्क्य की उदात्त आध्यात्मिक शिक्षा से यह ओत-प्रोत है। सम्पूर्ण उपनिषद् छः अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में मृत्यु के द्वारा समग्र पदार्थों के ग्रास किये जाने का, प्राण की श्रेष्ठता विषयक रोचक आख्यायिका तथा सृष्टि विषयक सिद्धान्तों का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में अभिमानी गार्ग्य तथा शान्त स्वभाव काशी के राजा अजातशत्रु का रोचक संवाद है। इसी अध्याय में पहली बार ब्रह्मविद याज्ञवल्क्य का साक्षात्कार होता है। तृतीय और चतुर्थ में जनक तथा

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

याज्ञवल्क्य का आख्यान है। पञ्चम अध्याय में नाना प्रकार के दार्शनिक विषयों का विवेचन है जैसे नीति-विषयक, सृष्टिविषयक तथा परलोकविषयक तथ्य। षष्ठ अध्याय में प्रवहण जैबलि तथा श्वेतकेतु आरुणेय का दार्शनिक संवाद है जिसमें जैबलि ने पञ्चाग्नि विद्या का विशद् विवेचन किया है।

इस उपनिषद् के आरम्भ में अश्वमेध की व्याख्या की गई है। अश्व में विश्वरूप को आरोपित करते हुए उषा को उसका सिर, सूर्य को आँख, वायु को प्राण, अग्नि को मुख और संवत्सर को आत्मा माना गया है। इस उपनिषद् में ब्रह्मज्ञान की शिक्षा प्रायः संवाद के माध्यम द्वारा दी गई है। पुनर्जन्म का सर्वप्रथम उल्लेख इसी उपनिषद् में मिलता है। यह ग्रन्थ उपनिषद् ग्रन्थों में आकार की दृष्टि से सबसे बड़ा है।

छान्दोग्योपनिषद्→ यह उपनिषद् सामवेद की तलवकार शाखा के अन्तर्गत छान्दोग्य ब्राह्मण का भाग है। छान्दोग्य ब्राह्मण में कुल दस अध्याय हैं। उनमें से पहले और दूसरे अध्यायों को छोड़कर शेष आठ अध्यायों का नाम छान्दोग्योपनिषद् है। यह उपनिषद् प्राचीनता, गम्भीरता तथा ब्रह्मज्ञान प्रतिपादन की दृष्टि से उपनिषदों में नितान्त प्रौढ़, प्रामाणिक तथा प्रमेय-बहुल है। इसके आठ अध्यायों या प्रपाठकों में अन्तिम तीन अध्यात्म-ज्ञान की दृष्टि से नितान्त महत्त्वपूर्ण है। इसके प्रथम दो अध्यायों में साम और उद्गीथ (सामगान) के रहस्य की व्याख्या की गई है। दूसरे अध्याय में ॐ की उत्पत्ति बताई गई है। तीसरे अध्याय में ब्रह्म को विश्व का सूर्य कहा गया है। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' - इस सिद्धान्त का प्रतिपादन भी इसी अध्याय में किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सत्यकाम जाबाल की कथा है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के उपायों की दृष्टि से यह अध्याय महत्त्वपूर्ण है। पञ्चम अध्याय में यह बताया गया है कि ब्रह्म ही सत्य है और वह सर्वत्र व्याप्त है। षष्ठ प्रपाठक छान्दोग्य का नितान्त महनीय अध्याय है जिसमें महर्षि आरुणि के

Scanned with CamScanner

ऐक्य प्रतिपादक सिद्धान्तों की रोचक व्याख्या है। जिस प्रकार याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक के सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म उपदेष्टा हैं, उसी प्रकार आरुणि छान्दोग्य के सर्वतोमान्य दार्शनिक हैं। सातवें अध्याय में नारद ने सनत्कुमार से ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा ली है। अन्तिम अध्याय में इन्द्र तथा विरोचन की कथा है तथा आत्मप्राप्ति के व्यावहारिक उपायों का सुन्दर संकेत किया गया है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner